आचार्य महाप्रज्ञ की छठी मासिक पुण्य तिथि

आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन में चातुर्य था : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 2 नवम्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन में चातुर्य एवं आवाज में माधुर्य था। उनकी अंतिम संयम तक इन्द्रियां सक्षम थी और कर्तृत्व विशिष्ट था।

उक्त विचार उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ की छठी मासिक पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि एकादशी के दिन वह महापुरुष चला गया। स्थूल शरीर नष्ट हो जाता है। पर जो परोपकार का जीवन जीते हैं वह दृष्टिगोचर होते रहते हैं। उन्होंने कहा कि जिसका मन अहिंसा, संयम, तप लक्षण वाले धर्म में रमा रहता है उस महापुरुष को देवता भी नमन करते हैं।

मुज्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि महानता की चार कसौटियां है। जिसका व्यक्तित्व, कर्तृत्व, वर्क्तृत्व और नेतृत्व आकर्षक होता है वह महान होता है। महानता की यह कसौटियां आचार्य महाप्रज्ञ के कण-कण में व्याप्त थी। वे संस्कृत, प्राकृत के विद्वान थे। पता नहीं कौनसी शक्ति थी कि पलक झपकते ही आशुकविता के लिए तैयार हो जाते थे ऐसी शक्ति हमें भी मिले। इस मौके पर साध्वी मनीषाश्री, साध्वी मुकलयशा ने अपने भावों को गीतों के माध्यम से व्यक्त किये। संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

बहुत जल्द आयेगी आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन पुस्तक

महाप्रयाण के 8 घण्टे पूर्व ही दी थी हरी झण्डी

आचार्य महाप्रज्ञ की नवीन पुस्तक 'जो सहता है वही रहता है' बहुत जल्द पाठकों तक पहुंचेगी। जीवन की दिशा बदलने वाले सूत्रों को समाहित करने वाली इस पुस्तक के सज्पादक मुनि जयंतकुमार ने उनके महाप्रयाण से 8 घण्टे पूर्व ही इस पर चर्चा की थी और आचार्य प्रवर ने उनके इस कार्य को पूर्ण करने का आशीर्वाद प्रदान किया था। इस पुस्तक को मुनि जयंतकुमार आचार्य महाप्रज्ञ के जन्म दिवस पर विशेष उपहार के तौर पर समर्पित करना चाहते थे। परन्तु अचानक उनके महाप्रयाण के कारण उनकी इच्छा अधूरी रह गई थी। अब वही पुस्तक बहुत जल्द पाठकों तक पहुंचेगी। इस पुस्तक का प्रकाशन जैन विश्व भारती लाडनूं के द्वारा किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि आचार्य महाप्रज्ञ की इसस पूर्व लगभग 300 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

पुस्तक के सज़्पादक मुनि जयंतकुमार के अनुसार इस पुस्तक में युवाओं की जीवन शैली और चिंतन प्रणाली को बदलने वाले सूत्रों को समाहित किये गये हैं। यह सूत्र उन आलेखों के हैं जो किसी न किसी माध्यम से मीडिया वालों तक पहुंचे हैं। इन आलेखों को नई सेटिंग के साथ प्रस्तुत कर इस पुस्तक को आकर्षक रूप दिया गया है।

शिक्षा में जीवन विषयक सेमिनार

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य एवं प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल के मार्गदर्शन में गांधी विद्या मन्दिर के मिलाप भवन में शिक्षा में जीवन विज्ञान विषय पर एक सेमीनार संस्था अध्यक्ष कनकमल दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित की गई आचार्य महाश्रमण ने शिक्षा के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए कहा कि सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण के लिए शिक्षा में जीवन विज्ञान की भूमिका महत्वपूर्ण है। जीवन विज्ञान विद्यार्थियों के मानसिक व भावात्मक विकास में सहायक है। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल ने विषय को विश्लेषित करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान के प्रयोग से ग्रंथियों के स्राव परिवर्तन होते हैं। स्वभाव परिवर्तन में सर्व परिवर्तन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अत: शिक्षा की परिपूर्णता जीवन विज्ञान को शिक्षा के साथ जोड़ने से ही संभव है। जीवन विज्ञान अकादमी के कार्य वाहक अध्यक्ष उदयचन्द दुगड़ 'दी ग्रेट' ने कहा कि ग्रामीण शिक्षण संस्थाओं में नशामुक्ति भ्रूण हत्या कार्यक्रम आयोजित होना चाहिए। संस्था के संयोजक सज़्पतराम सुराणा ने शिक्षण संस्थाओं में सज़्पर्क कर प्रचार करना चाहिए। जीवन विज्ञान के उपाध्यक्ष डॉ. एम.एम. बेहलीम शुशील निर्वाण, संजय दीक्षित, मनफुल फोजी, हंसराज सोनी, योग गुरु टीकमचन्द भोजक, मघराज जेदिया अनेक शिक्षक शिक्षिकाएं एवं गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था के अध्यक्ष कनकमल दुगड़ ने आगन्तुक अतिथियों का आभार व्यक्त किया।